।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाश : 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

राश्ट्रीय अणुव्रत ि ाक्षक संसद की त्रिदिवसीय संगोश्ठि भ्ाुरु

चरित्र मानों सौतेला बेटा हो गया है – आचार्य महाप्रज्ञ

–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 12 मार्च : राश्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि विकास की बड़ी–बड़ी घोशणाएं हो रही है। विकास दर, मुद्रा भंडार बढ़ाने की ओर सबका ध्यान जा रहा है पर आजादी के 60 वर्श बाद दे ा में चरित्र, नैतिकता का स्तर इतना गिर गया है इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा। ऐसा लग रहा है चरित्र के साथ सौतेले बेटे सा व्यवहार हो रहा है।

आचार्य महाप्रज्ञ कस्बे के मालू भवन में आयोजित प्रवचन कार्यक्रम में राश्ट्रीय अणुव्रत ि ाक्षक संसद की त्रिदिवसीय संगोश्ठि के भ्ाुभारम्भ अवसर पर बोल रहे थे। उन्होने कहा कि आज नैतिकता होती तो दे ा में कोई गरीब नहीं रहता। नैतिकता के बिना न व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है न समाज स्वस्थ रह सकता है और न ही राश्ट्र स्वस्थ रह सकाता है। जहां दो है, वहां नैतिकता भ्ाुरु हो जाती है। समाज की संरचना नैतिकता के आधार पर हुई है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने सरकार द्वारा चलाई जा रही नरेगा योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि इसके द्वारा गरिबों का भला हो सकता है पर इसमें भी भ्रश्टाचार व्याप्त हो गया है। गरीब इस समाध ान से दूर रह गया है। ऐसी स्थिति में जो चरित्र निर्माण और नैतिकता के क्षेत्र में कार्य करता है वह बहुत बड़ी बात है। इसके लिए अणुव्रत के कार्यकर्ताओं का प्रं ासनीय योग है। उन्होंने कहा कि दूनियां बहुत बड़ी है। बड़ी संख्या में पदार्थ है। बड़ी–बड़ी अटटालिकाएं है। पर किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता। पीछले दिनों में अनेक जगहों पर भूकंप ने तबाही मचाही और यह नश्ट हो गये। अगर कोई नश्ट होने से बचती है तो वह चरित्र और नैतिकता है। चाहे सामाजिक प्रणाली हो या राजनैतिक प्रणाली सभी जगह नैतिकता की अपेक्षा रहती है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि मैं उस धर्म की बात करता हूं जिसके बिना न राजनीति स्वस्थ रह सकती है और न समाज, परिवार स्वस्थ रह सकते है। वह धर्म है चरित्र, नैतिकता। जिस धर्म की पृश्ट भूमि में नैतिकता नहीं है मैं उसको धर्म मानने को तैयार नहीं हूं। उन्होने कहा कि धर्म स्थान पर रहे तब तक बहुत धार्मिक है, पर कर्मस्थान में जाने के बाद चेहरा बदल जाता है और चेहरे पर क्रूरता हावी हो जाती है। यह दोहरा चेहरा समाज के लिए सबसे बड़ी समस्या है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा ि ाक्षक ऐसा व्यक्ति होता है जिसके पास बुद्धि का वरदान होता है और ज्ञान का योग होता है। ि ाक्षक अपनी भाक्ति से अच्छा काम भी कर सकता है और बूरा भी कर सकता है। उन्होने अणुव्रत ि ाक्षक संसद से जुड़े ि ाक्षकों को अच्छे कार्य करने की प्रेरणा दी। युवाचार्य महाश्रमण ने मुनि सुखलाल द्वारा अपने आपको आगे का राही कहने के सन्दर्भ में कहा कि मुनिश्री इतनी जल्दी न करें। इनको अभी धर्मसंघ की खूब सेवा करनी है। प्रकृति का नियम है, आयु सबकी पूर्ण होती है, अगर आपके साथ कभी ऐसा हो तो हम यह कामना करते है कि आप देवलोक में भी अणुव्रत का काम करते रहे और देवताओं को अणुव्रती बनाने का प्रयास करें।

क्रम ा: 2

कार्यक्रम में अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने अणुव्रत ि ाक्षक संसद के अभ्युदय को 20 वर्श सम्पन्न करने की जानकारी देते हुए कहा कि इस संसद से 98 प्रति ात अजैन लोग जुड़े है। संसद के राश्ट्रीय संयोजक भीखमचंद नखत, पराम ाक डॉ. हीरालाल श्रीमाली डॉ. धर्मेन्द्र आचार्य, डॉ. मदनलाल कावड़िया, धर्मचंद जैन, चन्द्रकांत व्यास, प्रो. साधु ारण सुमन ने संसद के विभिन्न केन्द्रों की गतिविधियों की जानकारी दी एवं दे ा में चलाये जा रहे 353 अहिंसा प्रि ाक्षण केन्द्रों पर प्रका ा डाला। प्रवास व्यवस्था समिति के संरक्षक बनेचंद मालू ने कहा कि अणुव्रत ि ाक्षक संसद के सदस्य दे ा की संसद में पहुंचेंगें तभी दे ा का कल्याण होगा। उन्होंने मालू भवन में आचार्यश्री के तीन दिन तक प्रवचन कार्यक्रम रखने पर आभार जताया। वृद्ध साध्वी सेवा केन्द्र की व्यवस्थापिका साध्वी अणिमाश्री आदि साध्वियों ने गीत की प्रस्तुति दी। संचालन भीखमचंद नखत ने किया।

ि ाक्षा हर नागरिक का मौलिक अधिकार

अणुव्रत ि ाक्षक संसद के सहसंयोजक धर्मेन्द्र आचार्य एवं प्रो. साधु ारण ने बताया कि ि ाक्षा हर नागरिक का मौलिक अधिकार है। सरकार सर्वि ाक्षा अभियान के ग्रूप में जगह–जगह पर विद्यालय खोल रही है। पर आर्थिक मजबूरियों एवं अल्प समय के कारण आज भी करोड़ों बच्चे ि ाक्षा से नहीं जुड़ पा रहे हैं। बच्चे आदि विद्यालयों मे आते भी हैं तो ि ाक्षकों की अजागरुकता के कारण तथा सरकारी अव्यवस्था के कारण बच्चे सही ि ाक्षा नहीं पा रहे हैं। इसीलिए आज गैरसरकारी विद्यालयों की बाढ़ आ रही है। ऐसी स्थिति में अणुव्रत आन्दोलन ि ाक्षकों के अपने कर्तव्य बोध एवं ि ाक्षा में गुणात्मक विकास के लिए अणुव्रत ि ाक्षक संसद के रुप में कार्य कर रहा है, यह संसद दे ा भर में ि ाक्षा के द्वारा चारित्रिक मूल्यों के विकास के लिए 20 वर्शों से सतत् प्रयत्न ील है। 2 लाख ि ाक्षकों एवं लाखों–लाख छात्रों को अणुव्रत के माध्यम से जगाने के लिए श्रीडूँगरगढ़ में आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं युवाचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य एवं अणुव्रत प्राध्यापक मुनि सुखलाल के निर्दे ान में दे ाभर के चुने हुए अणुव्रती ि ाक्षकों की संगोश्ठी भ्ारु हो गई है। इस संगोश्ठी में बिहार, उत्तरप्रदे ा, मध्यप्रदे ा, आन्ध्रप्रदे ा, राजस्थान, हरियाणा, गुजरात से सौ से अधिक ि ाक्षक भाग ले रहे है। संगोश्ठी में इस बात पर विचार किया जा रहा है कि कैसे ि ाक्षा को सर्वसुलभ एवं गुणात्मक दृश्टि से संतुश्ट बनाया जाये।

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक/सहसंयसोजक